Volume-11, No. 2 Aug.-2024, pp. Hin.17-21

स्नातक स्तर पर पारम्परिक शिक्षा व्यवस्था एवं ऑनलाइन स्मार्ट क्लास शिक्षण

श्री शिव शंकर, शोध छात्र शिक्षाशास्त्र
डा. स्वाति सक्सेना, प्रभारी शिक्षा शास्त्र विभाग
दयानंद महिला महाविद्यालय कानपुर उ.प्र. भारत
छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय कानपुर उ.प्र. भारत

प्राचीन भारतीय सभ्यता विश्व कि सर्वाधिक रोचक तथा महत्वपूर्ण सभ्यताओं में से एक है। इस सभ्यता के समुचित ज्ञान हेतु हमें शिक्षा पद्धति का अध्ययन करना अति आवश्यक है, जिसमे इस सभ्यता को हजारों वर्षों से सुरक्षित रखा, उसका प्रचार प्रसार किया तथा उसमे संशोधन किया। भारत में शिक्षा पद्धति में हमें औपचारिक तथा अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों का उल्लेख प्राप्त होता है। औपचारिक शिक्षा हमें मंदिरों और विद्यालयों में प्राप्त होती हैं, जो वर्तमान के समय में कम हैं। प्राचीन काल में औपचारिक शिक्षा मंदिरों, आश्रमों एवं गुरुकुलों के माध्यम से दी जाती थी जो उच्च शिक्षा के केंद्र थे। वर्तमान में शांतिकुज हरिद्वार में आज भी गुरुकुल विधि से शिक्षा दी जाती हैं जहाँ शिक्षार्थी गुरुजन से ज्ञान प्राप्त करते है एवं ज्ञान की और अग्रसित होते है।

मुख्य शब्द– ई–पाठशाला, पारम्परिक शिक्षा, ऑनलाइन स्मार्ट क्लास शिक्षा, स्वयम पोर्टल

"विद्याविहीनः पशु" अर्थात् शिक्षा के बिना मनुष्य वस्तुतः पशुतुल्य हैं। वर्तमानकाल में ज्ञात हुआ है कि स्मार्ट क्लास अर्थात् आभासी शिक्षण के आगमन में शैक्षिक परिदृश्य में काफी बदलाव हुआ हैं परन्तु परम्परागत शिक्षण का महत्त्व किसी भी प्रकार से कम नहीं होता जो छात्रों के उज्जवल भविष्य के लिए सहायक सिद्ध होती है। स्मार्ट क्लास कक्षा शिक्षण शिक्षा में कई लाभ है परन्तु परंपरागत शिक्षा की अतुल्य भूमिका है।

प्राचीन काल में भारत में गुरुकुल और आश्रम की शिक्षा की परम्परा रही है परन्तु कालांतर में इसमें परिवर्तन होते गए एवं अनेक सोपान तय किये। वर्तमान में स्मार्ट बोर्ड, मार्कर पेन लेज़र, पॉइंटर नवीन बात नहीं रह गई अपितु स्लाइड प्रोजेक्टर एवं एल.सी.डी. प्रोजेक्टर कक्षा शिक्षण में अनिवार्य बनते जा रहे हैं जो छात्रों को माध्यमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक अनिवार्य कर दिए हैं।

प्राचीन भारतीयों ने शिक्षा को अत्याधिक महत्त्व प्रदान किया। भौतिक एवं आध्यात्मिक उत्थान तथा विभिन्न उतरदायित्वों के विधिवत निर्वाह हेतु शिक्षा कि महती आवश्यकता को सदा स्वीकार किया। वैदिक युग से ही इसे प्रकाश का स्रोत मान गया जो मानव जीवन के विभिन्न स्थानों को आलोकित करते हुए उसे सही दिशा–निर्देश देता है। **सुभाषित रत्न संदोह** में कहा गया है कि।

ज्ञानम तृतीय मनुजस्य नेत्रम समस्त तत्वारथाविलोक दक्षम।
तेजोऽनपेक्षम विग्तान्त्रायं प्रवृतिमत्सर्व जगततत्रेऽयेपि ।।

अर्थात

ज्ञान मनुष्य का तीसरा नेत्र है जो समस्त तत्वों के मूल को जानने में सहायता करता है तथा सही कार्यो को करने की विधि बताता है। प्राचीन भारतीयों का यह विश्वास था कि शिक्षा द्वारा प्राप्त एवं विकसित कि गई बुद्धि ही मनुष्य कि वास्तविक शक्ति है। प्राचीन भारतीयों कि दृष्टि में शिक्षा मनुष्य के सर्वागीण विकास का साधन थी जिसका उद्देश्य मात्र पुस्तकीय ज्ञान नहीं था अपितु मनुष्य के स्वास्थ्य का भी विकास करना था। शिक्षा के द्वारा मनुष्य आजीविका का उत्तम साधन मानना भारतीयों की दृष्टि में अभीष्ट नहीं था, ऐसी मान्यता वालों कि निंदा कि गई है। प्राचीन विचारकों कि दृष्टि में शिक्षा मनुष्य के साथ आजीवन चलने वाली वस्तु है।

पारम्परिक शिक्षा व्यवस्था एवं ऑनलाइन स्मार्ट क्लास शिक्षा–

पारम्परिक शिक्षा को अपने आप में परिभाषित नहीं किया जा सकता क्योंकि यह सदा स्थान और समय के अनुसार परिवर्तनशील है। कोई भी शिक्षण पद्धति जो स्थापित शिक्षण और सीखने के

तरीकों पर ध्यान केन्द्रित करती है वह पारम्परिक शिक्षा हो सकती है। पारंपरिक शिक्षा पर संस्कृति एवं स्थानीय तत्वों का प्रभाव अधिक रहता है। पारंपरिक शिक्षा, विद्यालय या विश्वविद्यालयों में एक शिक्षक के माध्यम से होता है। शिक्षक कोई भी एक अध्याय लेकर छात्रों के सामने पढाता है जिसमें शिक्षक विभिन उपकरण जैसे– चाक, मार्कर, ब्लैक बोर्ड/वाहिट बोर्ड इत्यादि। इसी के साथ–साथ विभिन्न प्रकार कि गतिविधियों के बारे में भी जानकारी उपलब्ध कराया जाता है। प्राचीन काल वर्तमान समय तक शिक्षा ग्रहण करने के विभिन्न प्रकार एवं तकनीकी का प्रयोग किया जाता रहा है, इस तकनीकी एवं परिवर्तनों में एक परिवर्तन स्मार्ट कक्षा शिक्षण का है, जो आज के समय में अत्यधिक प्रचलित है। स्मार्ट कक्षा शिक्षण का प्रभाव किस प्रकार से उच्च स्तर के छात्रों पर पड़ता है यही शोध का विषय है तथा यह भविष्य में किस प्रकार उपयोगी है, यह गुणवत्तापूर्ण एवं बेहतर शिक्षा कि प्रणाली है। वह विद्यार्थियों को दृश्य–श्रव्य साधनों के माध्यम से शैक्षिक अधिगम के लिए उपयोगी है।

वर्तमान में स्मार्ट क्लास को एक नवीन शिक्षण विधि के रूप में अपनाया जाने लगा है एवं स्मार्ट क्लास में अनुदेशात्मक सामग्री का उपयोग किया जाने लगा है। मनुष्य अपने ज्ञान को आगे बढाता जा रहा है। ज्ञान वृद्धि के साथ–साथ उसकी चिंतन शक्ति में भी वृद्धि होती जा रही है और अपने वातावरण से अधिक समन्वय स्थापित कर पाता है। मानव कि शक्ति असीमित है, जैसे ही उसके सामने कोई समस्या आती है, उसकी समस्त शारीरिक एवं मानसिक शक्तियां उसके समाधान के लिए एकाग्र हो जाती है।

31दिसम्बर 2019 को चीन द्वारा दिए गए कोरोना वायरस ने सभी देशों को अत्यधिक प्रभावित किया है, कोरोना वायरस कि महामारी ने लोगों को घरों में कैद होने को मजबूर कर दिया जिसने ऑनलाइन शिक्षण को प्रगति प्रदान की है। वर्तमान समय में शिक्षा प्राप्त करने के अनेक प्रकार के साधन उपलब्ध, जिसमें ऑनलाइन शिक्षा एवं स्मार्ट कक्षा शिक्षण प्रमुख है। कोरोना वायरस का प्रभाव हमारे शिक्षा प्रणाली पर भी पडा और शिक्षा प्राप्त करने के माध्यम पर भी पडा तथा ऑनलाइन शिक्षा का एकमात्र विकल्प समाज के सामने बचा। 17जुलाई 2019 को ग्लोबल इंडियन इंटरनेशनल स्कूल ने पुणे में भारत का पहला स्मार्ट विद्यालय प्रारंभ करने कि घोषणा की थी। स्मार्ट क्लास एक डिजिटल रूप से सुसज्जित कक्षा है जिसमें शिक्षक और सीखने के उपकरणों की एक श्रृंखला है, इसमें श्रव्य और दृश्य शिक्षण सामग्री शामिल है, जिसके माध्यम से शिक्षक कक्षा शिक्षण को मनोरंजन तथा आकर्षक बना सकते है। स्मार्ट कक्षाएं शिक्षा में एक आदर्श बदलाव को उत्प्रेरित करती हैं, गतिशील और गहन शिक्षा वातावरण प्रदान करती है। स्मार्ट कक्षा शिक्षकों और शिक्षार्थियों के कार्यो को सरल बनाती है बल्कि एक तकनीक और आकर्षक माहौल भी तैयार करती है। स्मार्ट कक्षा का उद्देश्य बच्चों की स्कूल प्रतिभा को और निखारना है ताकि वह आगे के क्लास में और बेहतर तरीके से पढाई कर सके।

स्मार्ट कक्षा शिक्षण प्रणाली को सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक समर्पित शिक्षा का अध्यापन के रूप में परिभाषित किया है, जो स्वाभाविक तौर पर क्रियात्मक होते है और जिनका उद्देश्य शिक्षार्थी को व्यक्तिगत अनुभव, अभ्यास और ज्ञान के सन्दर्भ में ज्ञान निर्माण को प्रभावित करना है।

नई शिक्षा नीति 2020 में शिक्षा क्रांति का दावा सम्मलित है, इसमें पाठ्य पुस्तकों का बोझ कम करने एवं पढाई को अधिक से अधिक प्रयोगात्मक बनाने कि बात कही गई है, जिसमें सर्वाधिक सहायक स्मार्ट कक्षा शिक्षण प्रणाली हो सकती है। परपरागत कक्षाओं से अधिक, शिक्षार्थियों को एक साथ सम्मलित कर सकता, अधिक दृश्य–श्रव्य सामग्री के उपयोग कि सुविधा इसमें उपलब्ध होती है। इस प्रकार परम्परागत शिक्षा, अपने प्राचीन स्वरुप को आधुनिक तकनीकी शिक्षा के डिजिटल माध्यमों के द्वारा वापस की है।

शिक्षा की परंपरागत शिक्षा प्रणाली ही भारत की पहचान है, आधुनिक शिक्षा तभी सुदृढ होगी जब वह शिक्षा की भारतीय परंपरागत को आत्मसात करेगी। वर्तमान में आत्मनिर्भर भारत के लिए शिक्षा में रूपांतरण अति आवश्यक है। इस प्रकार परम्परागत शिक्षा कागज विहीन होने से लेकर, पुस्तकों के रूप तक का सफ़र तय किया और पुनः वर्तमान में परंपरागत रूप से तकनीकी स्वरुप लेकर आधुनिक शिक्षा जगत में प्रवेश किया जिसे स्मार्ट कक्षा शिक्षण प्रणाली कहा जाता है।

डिजिटल कक्षा कि अवधारणा शिक्षा के भाग में क्रांति ला रही है, जो पारंपरिक शिक्षण के साथ प्रोधोगिकी को जोड़ कर एक गतिशील, कुशल और आकर्षिक शिक्षण वातावरण तैयार कर रही है। दूसरे शब्दों में, यह कहना उचित है कि बदलते समय के साथ तालमेल बिठाने के लिए,

शिक्षा क्षेत्र शिक्षा के प्रति अपना दृष्टिकोण बदल रहा है। पारंपरिक कक्षाओं को डिजिटल रूप से सक्षम स्मार्ट कक्षाओं में बदला जा रहा है। यह परिवर्तन डिजिटल कक्षा वयवस्था और डिजिटल स्मार्ट कक्षाओं के विकास से प्रेरित है, जो शिक्षकों और छात्रों दोनों के लिए शैक्षिक अनुभव बढ़ाने हेतु अत्याधुनिक तकनीकों का उपयोग करते है।

स्मार्ट क्लास ऑनलाइन– आशाजनक भविष्य का स्वप्न (कोविड 19) महामारी ने मानव अस्तित्व पर अनपेक्षित, अप्रत्याशित रूप से प्रतिघात किया। विश्व स्वास्थ संघठन, द्वारा इसके प्रभावी संक्रमण को रोकने के लिए एवं मानव प्रजाति को सुरक्षित रखने के लिए 22 मार्च 2020 को सम्पूर्ण विश्व में इसे महामारी घोषित करते सभी देशों में लॉक डाउन लगाने का आदेश दिया जिसके फल स्वरुप मानवीय क्रियाविधियों को संचालित करने हेतु ऑनलाइन विधि का सहारा लिया गया। इस प्रतिमान विस्थापन ने बहुत समस्याओं को जन्म दिया है तो हमें न्यू नार्मल में विकसित होने एवं भविष्य में सम्पूर्णता में वृद्धि का अवसर भी प्रदान किया। इसके अंतरगर्त कौशल एवं ज्ञान का कंप्यूटर एवं नेटवर्क समर्थित अंतरण है। ई–शिक्षा इलेक्ट्रॉनिक अनुप्रयोग और सीखने कि प्रक्रियाओं के उपयोग को संदर्भित करता है। ई–शिक्षा के अनुप्रयोगों और प्रक्रियाओं में वेब–आधारित शिक्षा, कंप्यूटर आधारित शिक्षा, आभासी कक्षाएं और डिजिटल सहयोग शामिल है। पाठ्य–सामग्रियों का वितरण इन्टरनेट, एक्स्ट्रानेट, ऑडियो या विडियो टेप, उपग्रह टी.वी और सी. डी रोम के माध्यम से किया जाता है।

ई–शिक्षा के समानार्थक शब्दों के रूप में सी.बी.टी (C-B-T) कंप्यूटर आधारित प्रशिक्षा, आई.बी.टी (I-B-T) इन्टरनेट आधारित प्रशिक्षा या डब्लयु. बी.टी. (W-B-T) वेब आधारित प्रशिक्षा जैसे संक्षिप्त शब्द रूपों का प्रयोग किया जा सकता है।

पारम्परिक शिक्षा और स्मार्ट क्लास शिक्षा के कुछ प्रमुख बिन्दुओं पर दृष्टि डालना आवश्यक है, जो इस प्रकार से है।

1. पारंपरिक शिक्षा सक्रिय सीखने के अवसर प्रदान करती है। पारंपरिक कक्षाएं छात्र को एक सक्रिय शिक्षण पद्धति प्रदान करती है जिन्हें कक्षा में उपस्थित रहकर सक्रिय भागीधारी निभानी होती है। शिक्षकों कि देख–रेख में छात्रों को कक्षा के भीतर शैक्षणिक समस्याओं को हल करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

वर्तमान समय में छात्र इन्टरनेट अधिन्यास व असाइनमेंट सहायकों से बहुत अधिक सहायता लेते है जिसमें असाइनमेंट प्रक्रिया अनावश्यक हो जाती है, साथ ही साथ छात्र कोई नया कौशल नहीं सीखते है।

1. पारंपरिक ज्ञान सामाजिक शिक्षा सिखाता है। पारम्परिक शिक्षा किसी व्यक्तिगत व्यक्ति पर ध्यान केन्द्रित नहीं करती है। पारंपरिक ज्ञान छात्रों को सीखने के समान अवसर का प्रदान करती है, जबकि स्मार्ट क्लास व्यवस्था में बच्चों के लिए समुदाय में सीखने के अवसर का अभाव है।

3. पारंपरिक शिक्षा अनुशासन को सुगम बनाती है। पारंपरिक कक्षा में शिक्षक छात्र को नियमबद्ध होकर अपना गृहकार्य करना सिखाता है। छात्र एक पारंपरिक रूप से विद्यालय जाता है। वह अनुशासन भी सीखता है, जो शैक्षणिक और व्यावसायिक भविष्य में सफलता कि कुंजी है। स्मार्ट क्लास में छात्रों में ध्यान का अभाव स्पष्ट दृष्टीगोचर होता हैं।

4. पारंपरिक शिक्षा संचार कौशल को बढाती है। जब छात्र विभिन्न गतिविधियों में भाग लेते है, तो वे दूसरों के साथ बातचीत करते हैं और अपने संचार कौशल में सुधार करना सीखते है जबकि स्मार्ट क्लास में छात्रों को उनके संचार कौशल को बेहतर बनाने में सहायता नहीं करते।

पारम्परिक शिक्षा एवं स्मार्ट क्लास का उद्देश्य– पारम्परिक शिक्षा के द्वारा शिष्टाचार और सामाजिक व्यवहार को अगली पीढ़ी तक पहुचायां जाता है जिसमें छात्रों को अपने के रीति–रिवाजों और परम्पराओं के बारे में जानकारी दी जाती है जिससे जीवन के नैतिक, शारीरिक, आध्यात्मिक और बौद्धिक पहलुओं पर ध्यान केन्द्रित करते है। इसमें विनम्रता, सच्चाई, अनुशाशन आत्मनिर्भरता और सभी प्राणियों के प्रति सम्मान जैसे मूल्यों पैर जूर देते हुए मनुष्य को प्रकृति के मध्य संतुलन के सहारना करना सीखाया जाता है। पारम्परिक शिक्षा में लिखित परीक्षा ना होकर मौखिक परीक्षण द्वारा धार्मिक ग्रंथों को कण्ठस्थ किया जाता है। अतः पारम्परिक शिक्षा के द्वारा कौशल, तथ्यों और नैतिक तथा सामाजिक आचरण के मानकों को आगे बढ़ाते हुए भौतिक उन्नत्ति के लिए आवश्यक मानते है।

स्मार्ट क्लास का उद्देश्य वर्तमान और भविष्य की शिक्षा को ध्यान में रखते हुए आधुनिक युग के शिक्षण को पुनर्परिभाषित करना है। डिजिटल लर्निंग विद्यार्थियों को बढावा देती है और पथ प्रदर्शक डिजाइन और समाधान विकसित किया

जाता है। इस शिक्षा प्रणाली को और अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए सूचना प्रौधोघिकी और इन्टरनेट का लाभ उठाया जाता है।

पारंपरिक शिक्षा का महत्व–

पारंपरिक शिक्षा से छात्रों में आत्मविश्वास बढता है, इसमें छात्र एक समूह में शिक्षक के साथ मिलकर किसी समस्या का समाधान ढूंढते है। एक–दुसरे के साथ मिलकर कार्य को पूरा करने से छात्रों में आत्मविश्वास कि वृद्धि होती है। पारंपरिक कक्षा में छात्रों में एक साथ कार्य करने, बातचीत करने एवं परियोजना कार्य करने से अनुभव बढ़ता है। पारंपरिक कक्षा में छात्र के पारस्परिक कौशल कि वृद्धि होती है, जो छात्र के व्यावसायिक एवं व्यक्तिगत जीवन के लिए सहायक सिद्ध होगी।

स्मार्ट क्लास से लाभ–

समकालीन डिजिटल प्रारूप शिक्षकों को किसी व्यक्ति के सीखने कि गति और क्षमता के आधार पर अध्ययन सामग्री को अनुकूलित करने कि अनुमति देता है। शिक्षा प्रणाली के डिजिटलीकरण के साथ शैक्षिक कार्यक्रमों का प्रभाव बढ़ रहा है। नवीन शिक्षण उपकरणों और प्रोधोगिकी के संपर्क में आने से छात्र प्रभावी स्वःदृनिर्देशित शिक्षण कौशल विकसित करते है। पारंपरिक शिक्षा प्रणाली जुडाव के सीमित स्थान प्रदान करती है जबकि डिजिटल शिक्षा प्रणाली सीखने के कई तरह के विकल्प प्रदान करती है। संसाधनों की असीमित उपलब्धता प्रत्येक सत्र को अत्यंत नवीन और आकर्षक बनाती है।

डिजिटल शिक्षा से हानि–

आर्थिक रूप से पिछड़े लोगों के लिए यह शिक्षा अधिक कठिन प्रतीत होती हैं। वे जो प्राथमिक स्कूल में अपने बच्चे को पड़ा रहे थे स्मार्ट क्लास हेतु स्मार्ट मोबाइल खरीदने एवं महेंगे रिचार्ज करवाने की समस्या का सामना करना पड़ा। इन्टरनेट पर सरलतापूर्वक सभी उत्तरों को सरलता से प्राप्त करने या होने के कारण छात्रों कि अपनी रचनात्मकता क्षमता कि कमी हो जाती है। साधारण समस्याओं और गृहकार्य के लिए भी, वे इन्टरनेट से सहायता लेने कि आदत बन जाती है।

डिजिटल ऑनलाइन के क्षेत्र में चुनौतियाँ–

ऑनलाइन शिक्षा प्रारंभ से ही वैकल्पिक शिक्षा का एक प्रतिरूप रहा है, जिसके कारण इस पर ध्यान प्रारंभ से ही कम रहा है, परन्तु कोविड–19 महामारी ने इसे मुख्य शिक्षा की धारा में जोड़ते हुए सभी देशों की शिक्षा की स्थिति एवं संचालन क्षमता को सभी के समक्ष प्रस्तुत किया है, जिसे विकसित देश से लेकर भारत समेत विकासशील देश भी शामिल है जिसमें डिजिटल उपकरणों, संसाधनों, इन्टरनेट कनेक्टिविटी तथा उपयुक्त परिवेश कि कमी जैसी सामान्य चुनौतियों के साथ साथ कुछ विशिष्ट चुनौतियाँ भी है।

भारत में ग्रामीण बाहुल्य क्षेत्र होने के कारण ऑनलाइन डिजिटल स्मार्ट परिवेश की उप्युकत्ता विचारणीय है। डिजिटल उपकरण कि उपलब्धता वाले क्षेत्रों में भी ऑनलाइन शिक्षा के प्रति जागरूकता तत्परता में कमी, संचालन कौशल एवं प्रशिक्षण में कमी पाई गई है। (अ.स.स.ओ.सी.एच. अ.ए.म. 2020)। इसके अतिरिक्त शिक्षार्थी–शिक्षक संलंगता, तनावपूर्ण वातावरण, बिजली आपूर्ति, विषय वस्तु के प्रस्तुतीकरण की समस्या, अकुशल, शैक्षणिक ढ़ाचा, डिजिटल थकान डर, एवं मूल्यांकन के सीमित अवसर आदि अनेक नकारात्मक कारक भी शिक्षा को दूषित करते हैं।

स्मार्ट क्लास शिक्षा के सम्बन्ध में भारत सरकार कि रणनीतियाँ और योजनाएं–

भारत सरकार ने ऑनलाइन स्मार्ट क्लास के सम्बन्ध में कई प्रकार कि योजनायें और रणनीतियां बनाई है, जो काफी प्रभावी भी हो रही है लेकिन इतनी विशाल जनसंख्या वाले देश के लिए अभी और प्रभावी तथा व्यापक रणनीति और योजनाओं कि आवश्यकता है

1. **स्वयम पोर्टल**– सक्रिय शिक्षण के अध्ययन के लिए मानव संसाधन विकास मंत्रालय के तहत एक कार्यक्रम है। इसके पास शैक्षिक सामग्री को प्रसारित करने के लिए 34 डायरेक्ट टू–होम (DTH) चैनल है। ये चैनल बहुभाषी है और ये निःशुल्क उपलब्ध है। स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग ने इन शैक्षिक चैनलों की पहुँच बढानें के लिए शैक्षिक वीडियों सामग्री को प्रसारित करने हेतु डी.टी.एच. ओपरेटरों के साथ भागीदारी की है–
2. **ई–पाठशाला और शिक्षा वाणी कार्यक्रम–** यह MHRD, CTET, NCERT द्वारा संयुक्त रूप से पेश किया गया था और नवम्बर 2015 को लॉन्च किया गया। ई–पाठशाला शैक्षिक संसाधनों का एक भंडारण घर है जिसे छात्रों, शिक्षकों, अभिभावकों एवं शोधकर्ताओं द्वारा उपयोग किया जाता है।

प्राचीन पद्धतियों और प्रथाओं पर आधारित पारम्परिक शिक्षा सदियों से ज्ञान संचरण का आधार रहीं है, जबकि प्रौधोगिकी और वैकल्पिक शिक्षण दृष्टिकोण के आगमान ने शैक्षिक परिदृश्य

में महत्वपूर्ण परिवर्तन किये है परन्तु इससे कदापि पारंपरिक शिक्षा के महत्व को कम करके आँका गया है। निःसंदेह पारम्परिक शिक्षा ज्ञान को एक मजबूत आधार प्रदान करता है। आलोचनात्मक सोच कौशल विकसित करता है। पारंपरिक शिक्षा अनुशासन समय प्रबंधन और समय विकास को बढावा देती है। पारंपरिक शिक्षा के स्थायी मूल्य को पहचानकर और इसे नवीन दृष्टिकोणों के साथ एकीकृत करके हम एक सर्वांगीण शैक्षिक विकास के स्वपन को साकार कर सकते है।

निष्कर्ष–

वर्तमान समय में स्मार्ट क्लास से शिक्षा प्राप्त करने में विधार्थियों को शिक्षण प्रदान करने में वृद्धि हुयी है। कोविड–19 महामारी ने शिक्षा क्षेत्र सहित सभी क्षेत्रों में नवाचार को आयाम दिया है। लोगों का मानना है कि पारंपरिक शिक्षण को डिजिटल शिक्षण द्वारा प्रतिस्थापित नहीं किया जा सकता। पारंपरिक शिक्षा में शिक्षा की जानकारी हेतु पुस्तकालय सर्वोतम साधन है जबकि वर्तमान समय डिजिटलीकृत शिक्षा व्यवस्था में इन्टरनेट पर खोज करना कहीं आधिक आसान एवं सुविधाजनक हैं परन्तु इन्टरनेट क्या पुस्तकालय का स्थान ले सकता है ?

क्योंकि एक ऐसा विषय जो इन्टरनेट कभी भी पूर्णता को प्राप्त करने में सक्षम नहीं हो सकता है। यह अतिश्योक्ति नहीं होगा कि पारंपरिक शिक्षा अभी भी सफलता की कुंजी हैं। पारंपरिक शिक्षा हेतु विधालय मात्र एक एकादमिक शिक्षण नहीं है अपितु यह एक सामाजिक संस्था भी है। इस प्रकार, डिजिटली कृत शिक्षा कि तुलना में पारंपरिक शिक्षा भी अपनी विशिष्टता रखती है।

प्राचीन काल से वर्तमान समय तक शिक्षा ग्रहण करने के विभिन्न प्रकार एवं तकनीकी का प्रयोग किया जाता रहा है, इन्ही तकनीकी एवं परिवर्तनों में से एक परिवर्तन स्मार्ट कक्षा शिक्षण का है, जो आज के समय में अत्यधिक प्रचलित है। 21वीं सदी का पहला बड़ा परिवर्तन शिक्षण में कंप्यूटर का आगमन है जिसने एक तरफ तो ज्ञान को बढाया है और शिक्षकों का भार न्यूनतम समय में आधुनिकतम प्रणालियों की उपयोग क्षमता के विकास की आवश्यकता के साथ बढ़ गया है कहना ना होगा कि सीखने कि गतिविधि के लिए अत्यंत कारगार उपाय के रूप में कंप्यूटर, स्लाइड शो, फिल्में आदि के साथ अनिवार्य होता जा रहा है। वर्तमान परिदृश्य में, तकनीकी उन्नति ने हमारे दैनिक जीवन को काफी प्रभावित किया है, इसलिए, यह आवश्यक हो जाता है कि शिक्षा प्रणाली को भी बदलते समय के साथ तालमेल बिठाने के लिए पुनर्गठित किया जाना चाहिए। इस सन्दर्भ में, शिक्षा के आधुनिकरण का उद्देश्य परम्परागत शिक्षण और उद्योग द्वारा आवश्यक प्रशिक्षण मिल सके जो उन्हें दैनिक कार्यों को अधिक कुशलता से करने में मदद करेगा। तकनीकी शिक्षा शिक्षा का उद्देश्य विद्याथियों को सर्वागीण प्रशिक्षण प्रदान करके उसके व्यक्तित्व का विकास करना हैं। ऐसी शिक्षा उसे दैनिक जीवन में चुनौतियों का सामना करने के लिए सक्षम बनाती है और सामाजिक भलाई के लिए उसके अंदर छिपी हुई क्षमताओं को सामने लाने में भी मदद करती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1. डॉ. रामविलास– लेख ऑनलाइन शिक्षा भविष्य कि जरुरत और चुनौतिया, International journal of Innovative Social Science & Humanities Research ISSN &2349&1876 (Print) एस .प्रो. इतिहास एवं शोध पर्यवेक्षक, पृ. 291
2. के. सी. श्रीवास्तव– प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति, प्रकाशक– यूनाइटेड बुक डिपो 21–यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद, ग्यारहवी आवृति. 2012–13, पृ. 762
3. अभिषेक वर्मा– मुख्य शिक्षा में ऑनलाइन शिक्षा कि भूमिका, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies- ISSN –2278–8808. Published 1 May, 2022.
4. अभिषेक वर्मा– मुख्य शिक्षा में ऑनलाइन शिक्षा कि भूमिका– Scholarly Research Journal for Inter disciplinary Studies- ISSN& 2278 – 8808- Published 1 May, 2022